The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com

वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली में स्त्री शिक्षा की दशा एवं दिशा

डॉ.मनीषा पाल
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोंडा।

शरांश :

वैदिक कालीन भारतीय समाज में स्त्री शिक्षा की स्थिति विवादपूर्ण थी। वेदों की श्रुति और स्मृति ग्रंथों में स्त्रियों को ज्ञान और विद्या के प्रति निष्कलंक अधिकार देने वाले पासेज़ भी मिलते हैं, लेकिन समाज में उन्हें व्यापक रूप से शिक्षित करने की परंपरा कम दिखती है।

वैदिक काल में, सोमनाथी उपनिषद में उल्लेखित है कि द्विजाति के सभी वर्णों के छात्रों को विद्या ग्रहण करनी चाहिए, जिसमें स्त्री छात्रियों को भी समाहित होना चाहिए। वैदिक ग्रंथों में कई श्रेष्ठ स्त्रियाँ जैसे कि गार्गी और मैत्रेयी का उल्लेख है, जो विद्या और ज्ञान की खोज में अपने आदर्शनीय योगदान प्रदान करती थीं।

हालांकि वैदिक समाज में स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहित किया गया, लेकिन यह अधिकांशतः विशेष परंपराओं और परिप्रेक्ष्यों के तहत थी, जिससे स्त्रियों के लिए प्रवेश कठिन था। उन्हें गृहस्थ जीवन के कार्यों में ही रहने की सलाह दी जाती थी और उन्हें बाहरी विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था।

संक्षिप्त में कहें तो, वैदिक कालीन भारतीय समाज में स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहित किया गया था, लेकिन उसकी परिधि और दिशा अधिकांशतः परंपराओं और सामाजिक प्रतिबद्धताओं के आधार पर निर्धारित होती थी।

शब्द कुँजी: *वैदिक काल, आध्यात्मिक शिक्षा, वैदिक साहित्य, गुरूकुल पद्धति, स्त्री शिक्षा, शिक्षा।*

भारतीय संस्कृति अपने चिंतन की व्यापकता, विविधता और वैचारिकता को लेकर सम्पूर्ण विश्व में अपनी विशिष्ट पहचान के लिए हमेशा से चर्चित रही। दर्शन हो या आध्यात्म, इतिहास हो या तर्क-विभिन्न क्षेत्रों में इसकी स्थापनाएँ अनन्त काल से स्त्री- मेधा को प्रभावित करती आ रही हैं। यद्यपि (संसार के बाह्य भौतिक स्वरूप में, संचार साधनों, वैज्ञानिक आविष्कारों आदि की उन्नति से बहुत अधिक परिर्वतन हुआ है, किन्तु इसके आन्तरिक (आध्यात्मिक पक्ष में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं हुआ। क्षुधा एवं अनुराग की पुरातन (शक्तियाँ और हृदयगत निर्दोष उल्लास एवं भय, मानव प्रकृति के गुण हैं। मानव-मस्तिष्क के इतिहास में भारतीय विचारधारा अपना एक अत्यन्त शक्तिशाली और भावपूर्ण स्थान रखती है। महान विचारकों के भाव कभी पुराने अर्थात अव्यवहार्य नहीं होते। वेदों से अनुप्राणित भारतीय संस्कृति में स्त्री का स्थान आदर और अधिकार की दृष्टि से पुरूष से ऊपर है। हमारे देश के मानव धर्म के प्रथम प्रस्तोता मनु ने कहा है कि

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता"

जहाँ स्त्रियों का आदर सत्कार होगा, उनकी मर्यादा की रक्षा होगी, उनकी सुख सुविधा का उचित प्रबन्ध होगा, वहाँ दिव्यभाव प्रेरणा, पनपेगी, और आसुरी भाव दवे रहेंगे। आधुनिक पाश्चात्य संस्कृति के सदृश, भारतीय संस्कृति में स्त्री जीविकार्जन की दृष्टि से पुरुष के समान या प्रतियोगी नहीं है, अपितु पूरक है। भारतीय सभ्यता के अनुसार प्रत्येक पुरूष के अन्दर स्त्री और प्रत्येक नारी के अन्दर पुरूष छिपा है। इसलिए स्त्री को पुरूष की अर्धांगिनी माना गया है। हमारी संस्कृति के सबसे बड़े देव "महादेव की कल्पना अर्धनारीश्वर रूप में की गयी है।

तंत्रसार में सभी कृष्णमंत्रो की अधिष्ठात्री दुर्गा को बतलाया है। बिहारी कवि ने "तीन लोक तार न तरनि सो तरे आधीन" इस उक्ति से कृष्ण की श्री राधिकाजी का आज्ञावर्ती माना है। तंत्रिक वर्णन है कि एक बार भगवान कृष्ण ने वृन्दावन में राधिकाजी के मनोरंजन के लिए कृष्णकाली स्वरूप धारण किया था। हरिद्वार में कृष्णकाली का मन्दिर अब भी विद्यमान है। मैने भी एक कृष्णकाली स्तोत्र की रचना की है। वेद में कृष्णोपनिषद् और राधिकोनिषद् दोनों प्राप्त है। सामरहस्य उपनिषद् में राधिकाजी का सनकादि से मिलन, गोपगोपियों का दिव्य वर्णन उन्हें मंत्र देना आदि वर्णन है। यह सब लौकिक नहीं हैं वेद द्वारा सिद्ध है। राधा पराशक्ति है, दिव्य नारी है, कुण्डलिनी शक्ति है, प्रेम शक्ति है। रूद्रयामल तंत्र में लिखा है "कृष्णरूपा भवेत् काली रामरूपा च तारिणी' अर्थात् काली ही कृष्ण है और तारा देवी ही श्रीराम है। आगमशास्त्रों में संसार में सभी शक्तियाँ है शिव तत्व तो एक है। श्री निमवाकीचार्य जी का कथन है "सखीसहस्त्रैः परिसेवितां सदा" हजारों सखियाँ राधिकाजी की सेवा में लगी रहती हैं जैसे ब्रह्मा भी सखी, विष्णु भी सखी और शंकर भी सखी इन्द्रादि देवगण चराचरादि सभी - सभी सखी गोपियों शब्द शक्ति थी। जिन्होंने उद्धवजी को शक्ति बल से मुग्ध किया था। कामबीजमंत्र क्लीं शब्द की साकार मूर्ति गोपियां थी। ब्रह्म चैतन्य की शुद्धशक्ति का गायत्री, सरस्वती आदि नामों से व्यवहार किया गया है। गोपयब्राह्मण में 1/30/38 में गायत्री शक्ति का विवरण उल्लिखित है। वस्तुतः स्थूल, सूक्ष्म और कारण ये तीनों बिन्दु ही

त्रिकोण के तीन स्थानों में सांकेतिक रूप से है। अ, उ, म, का, ओम् वेदस्वरूप है। यह त्रिकोण तीन आविर्भाव होता है। इसमें शिव समन्वित त्रिकोण से बाहय जगत् का आविर्भाव होता है। इसमें शिव और शक्ति दोनों का संमिश्रण है। चरक संहिता में लिखा है-

"स्त्रीषु प्रीतिर्विशेषण स्त्रीठवपत्यं प्रतिष्ठितम् ।

धर्मार्थो स्त्रीयु लक्ष्मीश्च स्त्रीषु लोका प्रतिष्ठिताः"

प्रीति का निवास हुआ कि अपराध का प्रयाश्चित भगवान् विष्णु को भी करना पड़ा। सब स्त्रियों में हैं। स्त्रियाँ माताएँ है। स्त्रियों धर्म परायणा होती है। सब संसार का अपितु विश्व का आधार है। इनके माता, स्त्री, धर्मपत्नी गृहलक्ष्मी, भागिनी, पुत्रवुधू आदि अनेक रूप है। प्रकृति, शक्ति देवी नारी स्वरूप का ही दिग्दर्शन है। "तस्यां पुनर्ववोभुत्वा दशमें मासि जायते । तज्जाया जाया भवति यदस्यां जायते" पुनः इस वैदिक मंत्र के आधार पर स्त्रीं का पति गर्भ में स्थित होकर दशवें महिने में पुत्ररूप में जन्म लेता है इसलिये स्त्री का नाम जाया भी है। विवाह के समय "सुमंली रियं वधूः" इत्यादि मंत्र से वर के द्वारा सिंदूर से वधू की मांग भरी जाती है, विन्दु धारण किया जाता है। वह रेखा सौभाग्यरेखा पर का मूक भावना दृष्टि रखने वाले रावण को जानकीजी ने उत्तर दिया है "नयन्ति निकृतिप्रज्ञ परदाए पराभवम्" अरे रावण । नष्ट बुद्धिवाले पुरूष का पराभव (पराजय) दूसरों की स्त्रियाँ कर देती है। तत्पश्चात् उसी प्रज्वलित ललाट रेखाने लंका को भस्म और अंत में लंकेश्वर को भी नष्ट कर दिया था। भारतीय नारियाँ दिव्य शक्यिाँ है। सती सावित्री ने अपने जब पतन हुआ तभी जालंधर का पतन भी शंकर के त्रिशूल से हुआ था इतना अवश्य प्रभाव ललाट बिन्दु का है यहीं शक्ति बिन्दु है यही नारी का स्वरूप है। बिस्मिल्लाह की इस मुस्लिम भाषा में "वे" बिन्दु वाचक रहस्पूर्ण है जो दाराशिकोह की उपनिषद् व्याख्या में मिलता है। बिन्दु ब्रह्म है शक्ति का परिचायक है। भारतीय परंपरा और मर्यादा की रक्षा करनेवाली नारी शक्ति हमेशा से रही है। इसका आभूषण सज्जा है और रक्षा का शस्त्र ललाट बिन्दु है "स्त्रिस्त्यावते स्पत्रपणकर्मणः" इस निरूक्त के वाक्य से भाष्यनुसार स्त्रियाँ पुरूषों से लज्जा करती है। व्याकरण की ही लज्जायाम् धातु है । ही लज्जा को कहते है। ही शब्द हर = शिव, ई = शक्ति दोनों की एकता नही है। प्रधानता शक्ति की है। अर्धचन्द्राकार बिन्दु धारण करने पर तांत्रिकों का नही लज्जाबीज बन जाता है। कृष्ण यजुर्वेद के मंत्र में न्ह श्च तेकलक्ष्मीश्च पल्वौ ओरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूप मश्विन्यौ व्यातम् । इष्टं में निषाण-इत्यादि में विष्णु की दो पत्नियाँ(स्त्रियाँ) हैं एक न्ही और दूसरी लक्ष्मी । वैदिक काल में यद्यपि परदे की प्रथा नहीं थी किन्तु आध्यात्मिक स्तर से लज्जा की पराकाष्ठा थी ।

जिस समय रावण अपनी ओर उन्मुखी भाव के प्रश्न जानकीजी से करने लगा तव "तृणमन्तरतः कृत्वां" तृणधरि ओट कहत वैदेही । सुमिरि अवधिपति परम सनेही" श्रीजानकीजी ने तिनके की ओट में उसे उत्तर दिया पर मन में श्रीराम के दर्शन कर रही थी।

अर्न्तजगत् में श्रीरामदर्शन तथा बाह्यजगत् में किसी भी समाज या देश की लगभग आधी आबादी महिलाओं की होती है। प्रायः यह देखा गया है कि पुरूष एवं महिला की शिक्षा में अंतर करने का प्रयास किया गया है रूसों जैसे विचारक ने भी बालिका (एमील में) के लिये अलग शिक्षा की योजना बनाई । यद्यपि इसके बहुत पहले बालक-बलिकाओं में शिक्षा में समय-समय पर अंतर रखा गया । भारत में भी पहले बालिकाओं के लिये कुछ विशेष विषय - सिलाई, कढ़ाई, गृह विज्ञान आदि प्रस्तावित किये जाते थे। हंसा मेहता कमेटी रिपोर्ट ने यह प्रस्तावित किया कि बालक-बालिकाओं के लिये पाठ्यक्रम समान होने चाहिये। अपनी सम्पूर्णता में बालक-

बालिकाओं के बौद्धिक स्तर में कोई अंतर नहीं देखा गया है। भारत में प्रारम्भ से ही ऐसे संकेत मिलते हैं कि नारियाँ ज्ञान के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में सहभागी हुआ करती थीं महिलाओं को मातृ देवी के रूप में चित्रित किया गया है। ऋग्वेद में उसे पृथ्वी या पृथिनी कहा गया है। हड़प्पा से प्राप्त एक लम्बी मुहर पर मातृ देवी का चित्र है। नारियों के उच्चतर ज्ञान में प्रवेश का उदाहरण जनक की वह विद्ववत सभा है, जिसमें कुरू एवं पांचाल जनपद के विद्वान सम्मिलित हुए थे। इस विद्ववत सभा में आठ अग्रवी शीर्षकों :- (1) उद्यलिक आरूण (2) अबूबक्स (3) आर्तभाग (4) मूज्यू (5) उशक्त (6) कहोड़ (7) शाकल्य (8) वचवनु वृहिता- गार्गी ने याज्ञवल्क से तत्व चिन्तन पर प्रश्न पूछा। इस आठ विद्वानों में गार्गी का होना महिला के उच्च / शिक्षा में प्रवेश का सशक्त उदाहरण है।

याज्ञवल्कय की पत्नी मैत्रेयी का भी यह कथन कि आप जिस अमरत्व को जानते है, उसे ही बताइये" उसकी तात्विक दृष्टि का संकेत देता है। स्त्रियाँ ज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती थी। गार्गी मेत्रेयी के अतिरिक्त ऋग्वेद में यह उल्लेख मिलता है कि विश्वनारायण घोष अपाला सदृश्य स्त्रियों ने मंत्रो की रचना की वेदोत्तर काल में स्त्रियों की शिक्षा का स्वरूप क्या था ? बौद्ध समाज एवं साहित्य में स्त्री की शिक्षा में कितनी सहभागिता थी? जैसे साहित्य और समाज में स्त्रियाँ किस तरह शिक्षा पा रही थी ? भारत में अरबों के आगमन के पूर्व इन सभी प्रश्नों पर सम्यक् विचार के लिए एक विस्तृत एवं गम्भीर अध्ययन की आवश्यकता है।

यद्यपि वर्तमान समय नारी आन्दोलनो का युग है और नारी की शिक्षा को लेकर अनेक अध्ययन हुए हैं। कुछ महत्वपूर्ण अध्ययनों का शीर्षक हैगुजरात राज्य में किशोरियों की समस्यओं (पौर्रिशन आस्पटेल 1966), अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को मुस्लिम महिलाओं के दाम्पत्य सम्बन्ध एवं सामंजस्य अनिवृत्ति का अध्ययन (फातिमा 1975), नारी शिक्षा के उद्देश्य जैसा छात्रों और अभिभावकों ने अनुभव किया (गोवधालेकर 1976), केरल की मुस्लिम महिलाओं की दिशा एवं सामाजिक स्तर (इन्द्रकुमारी 1976), आसाम में नारी शिक्षा का विकास (लाखर 1976), विवाहित अध्यापिकाओं की शैक्षिक व्यवसाय के प्रति अभिवृत्ति (शखवल 1976) कालेज छात्राओं की समस्याओं तथा वृद्धि र उपलब्धि से उनके सम्बन्ध का अध्ययन (वृणनन 1977), छात्राओं में भगोड़ेपन की समस्या का सामाजिक एव मनोवैज्ञानिक अध्ययन (हरजीत कौर 1979), पश्चिम बंगाल के चुने हुए जनपदों में बालिका शिक्षा की समस्याओं का अध्ययन (दत्त 1979), विभिन्न व्यवसायरत महिलाओं का प्रत्यय (गायत्री 1980), इन्दौर शहर में मुस्लिम महिलाओं का स्तर (राजवाड़े, ग्रामीण महिलाएं एवं माध्यमिक शिक्षा 1980) (वास्तवकुमारप्पा 1980), पिछले दो दशकों में नारी सम्बंधी अनेक अध्ययन प्रकाशित हुए हैं। कुछ नारी वादी विमर्श के अन्तर्गत ओर बहुत उससे इतर सबका संकेत करना अधिक संगत नहीं हागा, किन्तु पिछले एक दो वर्षों में नारियों ने स्त्रियों को लेकर कुछ पुस्तकें रची है, जिनमें मुख्य है- स्त्री सरोकार (आशारानी व्होरा, 2002), हम समय औरतें (मनीषा, 2002), बाधाओं के बावजूद नयी औरत (ऊषा महाजन 2001), स्त्रीत्ववादी विमर्श समाज और साहित्य (क्षमा शर्मा 2002), स्वागत है बेटी (विभादेवी शरे 2002), स्त्रीघोष (कुमुद शर्मा 2002), उपनिवेश में स्त्री (प्रीति खेतान 2003) , हिन्दी साहित्य का आधा इतिहास (सुमुन राजे 2003) औरत के लिए (नासिरा शर्मा)

विश्वविद्यालय स्तरपर भी अनेक शोधालय ने भी नारी को अपना अध्ययन केन्द्र बनाया है। उसके विभिन्न पक्षों पर निरंतर कार्य किया जा रहा है। |

उपर्युक्त विश्लेषण से यह संकेत उभरता है कि प्राचीन भारत में नारी की शिक्षा को लेकर अधिक गम्भीर अध्ययन की आवश्यकता अभी भी है। सामान्य रूप से बौदिक शिक्षा, वेदोत्तर कालीन शिक्षा, बौद्ध एवं जैन शिक्षा पर अनेक अध्ययन प्रस्तुत किए गए हैं, पर नारी की स्थिति और उसकी शिक्षा व्यवस्था को लेकर गंभीर अध्ययन का अभाव है। प्रस्तुत अध्ययन इसी अभाव की पूर्ति करेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. सारस्वत, मालती और मदन मोहन, (2009), भारतीय शिक्षा का इतिहास एंव समस्यायें, इलाहाबाद : न्यू कैलाश प्रकाशन, पृ० - 1 - 24।

2.राधा कृष्णन, सर्वपल्ली (2012), भारतीय दर्शन - 1 दिल्लीः राजपाल एण्ड सन्स, पृ० - 5 2.

3. जैन, महावीर सरन, (2010), भगवान महावीर एवं जैन दर्शन, इलाहाबाद : लोक भारती प्रकाशन, पृष्ठ-24,52.

4. विद्यालंकार, मनोहर, (1994), वेद प्रदीप नारी तथा वेदाध्ययन अंक - 3 पृष्ठ - 24।

5. विद्यालकार मनोहर, (1995), वेद प्रदीप, वेद में नारी का स्थान अंक 4 पृष्ठ - 16|

6.मजूमदार, वी. (2013)

7. जिगना, ए. रावल (2013). "प्राचीन भारत में महिला शिक्षा "IMJAR 87 Volume : 1 / ISSUE:3"

8. सर्वपल्ली, आर. के. (2012), भारतीय दर्शन - 1, दिल्लीः राजपाल एण्ड सन्स पृष्ठ - 232,233.

9. पाण्डेय, रामशकल, (2010). "विश्व के श्रेष्ठ शिक्षा शास्त्री विनोद पुस्तक मन्दिर आगराः पृ. - 296,

10. सरन, महावीर जैन, (2010), भगवान महावीर एवं जैन दर्शन, इलाहाबादः

लोकभारती प्रकाशन, पृष्ठ - 27,91, 213.

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-2, July-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number July-2023/45
Impact Factor (IIJIF-1.561)
https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ.मनीषा पाल

for publication of research paper title

वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली में स्त्री शिक्षा की दशा एवं दिशा

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-02, Month July, Year-2023.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY